17

अस्त्र का वृतान्त

ध्यान दें:

पूर्व पाठ में नाटक के पारिभाषिक शब्दों को जाना। उसमें नान्दी सूत्रधार नेपथ्यं स्वगतं प्रकाशम् कुछ प्रसिद्ध शब्दों को जाना। युद्ध की वार्ता को जानकर कर्ण ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। माता कुन्ती के वचनों से बंधा हुआ, गुरु द्वारा शापित कर्ण अपने दु:ख को सहने में असमर्थ शल्यराज के लिए कहता है। वहाँ गुरु ने किस कारण से कर्ण को श्राप दिया, कर्ण स्वयं अपने मुख से शल्य से कहता है। इसलिए ही यह कथा अस्त्र का वृत्तान्त कहा जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- कर्ण का गुरु के समीप जाना;
- कर्ण ने असत्य कहकर कैसे गुरु से अस्त्रविद्या को अर्जित किया इस विषय के जान पाने में;
- कर्ण के गुरु ने कर्ण के झूठ को जानकर कर्ण को क्या श्राप दिया जानने में;
- कुछ कृदन्त रूपों में प्रकृति प्रत्यय का निर्णय कर सकने में;
- कुछ शब्दों के अमर कोश में समानार्थी शब्दों को जानने में;

17.1) मूल पाठ

शल्य:- ममाप्यस्ति कौतूहलमेनं वृत्तान्तं श्रोतुम्।

कर्ण:- पूर्वमेवाहं जामदग्यस्य सकाशं गतवानस्मि।

शल्य:- ततस्तत:

कर्ण:- तत:

ध्यान दें:

विद्युल्लताकपिलतुंगजटाकलाप-
मुद्यत्प्रभावलयिनं परशुं दधानम्।
क्षत्रान्तकं मुनिवरं भृगुवंशकेतुं
गत्वा प्रणम्य निकटे निभृतः स्थितोऽस्मि॥1॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- विद्युल्लताकपिलतुंगजटाकलापम् उद्यत्प्रभावलयिनं परशुं दधानं क्षत्रान्तकम् भृगुवंशकेतुं मुनिवरं गत्वा प्रणम्य निकटे निभृतः स्थितः अस्मि॥1॥

व्याख्या- विद्युत की लता के समान पीली और लम्बी जटा के समूह जिसके हैं वह। प्रभा की परिधि से घिरे हुए, परशु को धारण करने वाले क्षत्रियों के विनाशक भृगु वशं केतु और मुनियों में श्रेष्ठ के पास जाकर और प्रणाम करके चुपचाप एक तरफ खड़ा हो गया। वसन्ततिलका छन्द॥9॥

सरलार्थ- शल्य तब कहता है की उसको भी अस्त्र कथा को सुनने के लिए बहुत कौतुहल है। कर्ण कहता है कि वह पहले परशुराम के पास गया। विद्युत लता के समान कपिल वर्ण वाली महान जटा को धारण किए, और हाथ में उज्जवल धार वाले परशु को धारण किए, उस क्षत्रिय विनाशक भृगु श्रेष्ठ तपस्वी के पास जाकर और प्रणाम कर वह कर्ण उनके पास मौन स्थित हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- गत्वा - गम् + क्त्वा प्रत्यय।
- प्रणम्य - प्र + नम् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय।
- विद्युत् - तडित्सौदामिनी विद्युच्चंचला चपला अपि।

17.2) मूल पाठ

शल्यः- ततस्ततः

कर्णः- ततो जामदग्न्येन ममाशीर्वचनं दत्त्वा पृष्टोऽस्मि। को भवान् किमर्थमिहागत इति।

शल्यः- ततस्ततः।

कर्णः- ततः भगवन्! अखिलान्यस्त्राण्युपशिक्षितुमिच्छामीत्युक्तवानस्मि।

शल्यः- ततस्ततः।

कर्णः- तत उक्तोऽहं भगवता ब्राह्मणेषूपदेशं करिष्यामि न क्षत्रियाणमिति।

शल्यः- अस्ति खलु भगवतः क्षत्रियवंश्यैः पूर्ववैरम् ततस्ततः।

कर्णः- ततो नाहं क्षत्रिय इत्यस्त्रोपदेशं ग्रहीतुमारब्धं मया।

शल्यः- ततस्ततः।

कर्णः- ततः कतिपयकालातिक्रमे कदाचित् फलमूलसमित्कुशकुसुमाहरणाय गतवता गुरुणा सहानुगतोऽस्मि।

शल्यः- ततस्ततः।

ध्यान दें:

कर्णः- ततः स गुरुर्वनभ्रमणपरिश्रमान्मदंके निद्रावशमुपगतः।

शल्यः- ततस्ततः

कर्णः- ततः

कृत्ते वज्रमुखेन नाम कृमिणा दैवान्ममोरुद्वये
निद्राच्छेदभयादसह्यत गुरोर्धैर्यात् तदा वेदना।
उत्थाय क्षतजाप्लुतः स सहसा रोषानलोद्दीपितो
बुद्ध्वा मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्तिवति॥10॥

व्याख्या- कुछ समय के बाद फल, मूल, समिधा, कुश, कुसुम लाने के लिए। वन में भ्रमण करने के परिश्रम से।

श्लोक अन्वय- दैवात् वज्रमुखेन कृमिणा मम ऊरुद्वये कृत्ते सति तदा गुरोः निद्राच्छेदभयात् धैर्यात् वेदना असह्यत। ततः क्षतजाप्लुतः सः उत्थाय सहसा रोषानलोद्दीपितः मां बुद्धवा ते अस्त्राणि कालविफलानि सन्तु इति मां शशाप।।10।।

व्याख्या- अभाग्य से वज्रमुख कीड़े ने मेरी जंघा पर काट लिया उस समय गुरु परशुराम के नींद भंग के भय से धैर्य से उस वेदना को सहन किया। फिर रक्त से गीले हुए महर्षि ने नींद से उठकर क्रोधित होकर कर्ण को क्षत्रिय जानकर समय आने पर कर्ण के अस्त्र निष्फल हों इस प्रकार का श्राप दिया। इस कारण से कर्ण उन्हें भूल गया। शार्दूलविक्रीडितं छन्द।।10।।

सरल अर्थ- कर्ण को मौन स्थित देखकर परशुराम ने आशीर्वाद देकर किसलिए वह आया यह पूछा। कर्ण ने तब निवेदन किया कि मैं अखिल अस्त्र शस्त्रों को सीखने के लिए इच्छा करता हूँ। तब परशुराम ने कहा कि ब्राह्मणों को शिक्षित करता हूँ, क्षत्रियों को नहीं। क्योंकि क्षत्रियों के साथ उनके पूर्व वैर है। तब मैं क्षत्रिय नहीं हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ इस प्रकार के मिथ्या वचनों को कहकर कर्ण ने अस्त्र विद्या को सीखना आरम्भ किया। फिर एक दिन फल, फूल, कुश, कुसुम आदि को लाने के लिए गुरु परशुराम के साथ गया। गुरु वन में भ्रमण करने के परिश्रम से कर्ण की गोद में सो गए। अभाग्य वश वज्रमुख नामक एक कीड़े ने उसकी जंघा पर काट लिया। किन्तु गुरु की नींद में विघ्न होगा ऐसा विचार कर उसने कीड़े के काटने की पीड़ा को सहा। किन्तु रक्त से गीले हुए गुरु निद्रा से उठकर सब जानकर क्रोधित होकर श्राप दे दिया कि युद्ध काल में तुम्हारे अस्त्र विफल होंगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उपशिक्षितुम् - उप + शिक्ष् + तुमुन् प्रत्यय
- ग्रहीतुम् - ग्रह + तुमुन् प्रत्यय।
- असह्यत - सह + कर्मणि, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- उत्थाय - उत + स्था + क्त्वा, ल्यप् प्रत्यय।
- शशाप - शप् +लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- सहसा - अतर्किते तु सहसा स्यात् इति।
- वेदना - आक्रोशनमभीषंग संवेदों वेदना न ना इति।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-1

1. कर्ण की माता कौन है?
2. कर्ण अस्त्र शिक्षा के लिए किसके समीप गया?
3. जामदग्न्य किसे अस्त्र शिक्षा का उपदेश देते हैं?
4. किस नाम के कीड़े ने कर्ण की जंघा पर काटा?
5. परशुराम ने कर्ण को क्या श्राप दिया?

17.3) मूल पाठ

शल्यः- अहो कष्टमभिहितं तत्रभवता।

कर्णः- परीक्षामहे तावदस्त्रस्य वृत्तान्तम्। तथा कृत्वा एतान्यस्त्राणि निर्वीर्याणीव लक्ष्यन्ते। अपि च-

इमे हि दैन्येन निमीलितेक्षणा
मुहुः स्खलन्तो विवशास्तुरंगमाः।
गजाश्च सप्तच्छददानगन्धिनो
निवेदयन्तीव रणे निवर्तनम्॥11॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- हि दैन्येन निमीलितेक्षणाः मुहुः स्खलन्तः विवशाः इमे तुरंगमाः सप्तच्छदादगन्धिनः गजाः च रणे निवर्त्तनं निवेदयन्ति इव।11।।

व्याख्या- दीन भाव से आपन्न घोड़े अपनी आंखों को बन्द करके बार-बार गिर रहे हैं, सप्तपर्ण की गन्ध से युक्त हाथी युद्ध से लौटने का निवेदन कर रहे हैं। युद्ध की ओर जाते हुए घोड़े और हाथी मुझे युद्ध से निकलने के लिए सूचित करते हैं अर्थात नहीं जाना चाहिए। वंशस्थ छन्द।।11।।

सरलार्थ- इस कथा को सुनकर शल्यराज को दुःख हुआ। कर्ण अस्त्र की कथा सत्य है अथवा नहीं परीक्षा के लिए उद्यत हुआ। उसने देखा कि अस्त्र सामर्थ्य रहित ही दिखाई दे रहे हैं। अश्व ले चलने की मुद्रा में हैं, भागने के लिए उनमें उत्साह नहीं है, इसलिए वे स्खलित हो रहे हैं। और हाथी भी दुर्गन्ध युक्त मद को गिराकर युद्ध से निकलने की इच्छा करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कष्टम् - स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलम् इति।
- वृत्तान्तः - वार्ता प्रवृत्तिर्वत्तान्त उदन्तः स्यात् इति।

17.4) मूल पाठ

कर्णः- शंखदुन्दुभयश्च निःशब्दाः।

शल्यः- भो कष्टं किं नु खल्विदम्।

कर्णः- शल्यराज! अलमलं विषादेन।

ध्यान दें:

हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः।
उभे बहुमते लोके नास्ति निष्फलता रणे॥12॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- रणे वीरः हतः अपि स्वर्गं लभते, जित्वा यशः लभते, लोके उभे बहुमते। रणे निष्फलता नास्ति॥12॥

व्याख्या- युद्ध में वीर योद्धा को मृत्यु प्राप्त हो तो भी स्वर्ग लोक को प्राप्त करता है और जीतकर यश को प्राप्त करता है। संसार में वीरों के लिए दोनों ही अभीष्ट है। अतः युद्ध करने में निष्फलता नहीं है दोनों में लाभ ही है। अनुष्टुप् छन्द॥12॥

सरलार्थ- कर्ण युद्ध में अपने अशुभ लक्षणों को देखकर कहता है - दुन्दुभि शब्द भी सुनाई नहीं दे रहे हैं। शल्यराज कष्ट को प्रकट करता है। कर्ण उसे सांत्वना देता है और कहता है- विषाद मत करो। फिर कर्ण युद्ध में अशुभ लक्षणों की गणना माननीय नहीं है युद्ध में वीरों के लिए जय और पराजय दोनों ही सफलता को प्रदर्शित करती है। युद्ध में पराजय हो तो स्वर्ग प्राप्त होता है और यदि विजय हो तो यश प्राप्त होता है। इसलिए युद्ध करने में निष्फलता नहीं है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वाच्यान्तरम् - हतः अपि स्वर्गं लभते कर्तरि। हतेन अपि स्वर्गः लभ्यते कर्मणि।
- रणे निष्फलता न अस्ति कर्तरि- रणे निष्फलतया न भूयते।

17.5) मूल पाठ

कर्णः- अपि च

इमे हि युद्धेष्वनिवर्तिताशा
हया सुपर्णेन समानवेगाः।
श्रीमत्सु काम्बोजकुलेषु जाता
रक्षन्तु मां यद्यपि रक्षितव्यम्॥13॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- हि युद्धेषु अनिवर्तिताशाः सुपर्णेन समानवेगाः श्रीमत्सु काम्बोजकुलेषु जाताः इमे हयाः यद्यपि मया रक्षितव्यम् तथापि ते इदानीं मां रक्षन्तु॥13॥

व्याख्या- संग्राम में जो सफलता की आशा को नहीं त्यागते वे गरुड़ के समान वेगी, कम्बोज कुल में उत्पन्न होने के कारण संसार में काबुली नाम से प्रसिद्ध हुए कल तक वे घोड़े मेरे द्वारा रक्षित थे फिर भी अब युद्ध काल में वे मेरी रक्षा करें। उपजाति छन्द॥13॥

सरलार्थ- अब अपने शुभ लक्षणों की प्रशंसा करता हुआ कर्ण कहता है- ये घोड़े युद्ध में आशा को नहीं त्यागते, ये गरुड़ के समान द्रुतवेगी काम्बोज देश में उत्पन्न हुए। यद्यपि ये घोड़े कर्ण के द्वारा रक्षणीय है, फिर भी अब वे युद्ध में कर्ण की रक्षा करें ऐसी कर्ण की प्रार्थना है।

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- रक्षितव्यम् - रक्ष् + तव्य प्रत्यय।
- सुपर्णः - नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः इति।

17.6) मूल पाठ

कर्णः- अक्षयोऽस्तु गोब्राह्मणानाम्। अक्षयोस्तु पतिव्रतानाम्। अक्षयोऽस्तु रणेष्वपरागुखानां योधपुरुषाणाम्। अक्षयोऽस्तु मम प्राप्तकालस्य। एष भोः प्रसन्नोऽस्मि।

समरमुखमसह्यं पाण्डवानां प्रविश्य
प्रथितगुणगणाढयं धर्मराजं च बद्ध्वा।
मम शरवरेगैरर्जुनं पातयित्वा
वनमिव हतसिंहं सुप्रवेशं करोमि॥14॥
शल्यराज! यावद्रथमारोहावः।

शल्यः- बाढम्।

(उभौ रथारोहणं नाटयतः)

कर्णः- शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

व्याख्या- गो ब्राह्मणों का कल्याण हो, पतिव्रता स्त्रियों का कल्याण हो, युद्ध में पीठ दिखाकर न भागने वाले योद्धा का, सुअवसर प्राप्त किए हुए मुझ कर्ण का भी कल्याण हो।

श्लोक अन्वय- पाण्डवानाम् असह्यं समरमुखं प्रविश्य प्रथितगुणगणाढयं धर्मराजं बद्धवा च मम शरवरवेगैः अर्जुनं पातयित्वा हतसिंहं वनम् इव सुप्रवेशं करोमि॥14॥

व्याख्या- पाण्डव पुत्रों सहन करने में अशक्य युद्ध में प्रवेश करके प्रसिद्ध गुणों से सम्पन्न धर्मराज युधिष्ठिर को बांध कर और मेरे बाणों की वर्षा से उस अर्जुन को मारकर, जिस वन में सिंह को मार दिया हो जैसे वह वन सुगमता से प्रवेश योग्य होता है उसी प्रकार युद्ध स्थल को करता हूँ। मालिनी छन्द॥14॥

सरलार्थ- अपने शुभ को सोचते हुए सभी का कल्याण हो ऐसी कर्ण ने प्रार्थना की। उसने कहा- गो ब्राह्मणों का, सती स्त्रियों का, युद्ध में पीठ न दिखाने वाले योद्धाओं का और मुझ कर्ण का कल्याण हो। अब प्रसन्न होकर कर्ण ने शल्य से उसकी चिकीर्षा को कहता है कि पाण्डवों के युद्ध स्थल को प्रवेश कर प्रख्यात गुणशाली धर्मराज युधिष्ठिर को बांधकर अर्जुन को बाणों की वर्षा से मार दूंगा। और जैसे वन में यदि सिंह मर जाए तो वह वन सभी के लिए निडरता से प्रवेश योग्य होता है, उसी प्रकार पाण्डवों का युद्ध स्थल सभी के लिए प्रवेश योग्य होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रविश्य - प्र + विष् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय
- पातयित्वा - पा + णिच् + क्त्वा प्रत्यय।
- वनम् - अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् इति।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-2

6. युद्ध में किसलिए जय और पराजय में विफलता नहीं है?

7. कर्ण के घोड़े किस देश में उत्पन्न हुए?

8. पाण्डवों में कर्ण किसे मारना चाहता है?

पाठ सार

- इस पाठ में मुख्य विषय है कर्ण का अस्त्र विद्या की प्राप्ति के लिए जाना। गुरु के पास विद्या की प्राप्ति। और गुरु का श्राप। यह अस्त्र कथा ही कर्ण अपने मुख से शल्यराज को सुनाता है। संक्षेप में वह नीचे वर्णित है।
- कर्ण अस्त्रवृत्तान्त को कहता है-
- पहले कर्ण परशुराम के पास जाकर प्रणाम करके पास में मौन खड़ा हो गया। फिर परशुराम ने पूछा- आप किसलिए यहाँ आए हो। फिर कर्ण ने निवेदन किया कि अखिल अस्त्र विद्या को सीखने के लिए मैं यहाँ आया। फिर परशुराम ने कहा कि ब्राह्मणों को शिक्षित करता हूँ, क्षत्रियों को नहीं। फिर मैं क्षत्रिय नहीं हूँ इस प्रकार कहकर कर्ण ने अस्त्र विद्या को सीखना आरम्भ किया। फिर एक दिन फल, फूल, कुश, कुसुम आदि को लाने के लिए गुरु परशुराम के साथ गया। गुरु वन में भ्रमण करने के परिश्रम से कर्ण की गोद में सो गए। अभाग्य वश बज्रमुख नामक एक कीड़े ने उसकी जंघा पर काट लिया। किन्तु गुरु की नींद में विघ्न होगा ऐसा विचारकर उसने कीड़े के काटने की पीड़ा को सहा। किन्तु रक्त से गीले हुए गुरु निद्रा से उठकर सब जानकर क्रोधित होकर श्राप दे दिया कि युद्ध काल में तुम्हारे अस्त्र विफल होंगे।
- इसी प्रकार अस्त्र वृत्तान्त को कहकर कथा के परीक्षण के लिए कर्ण उद्यत हुआ। वह कहता है कि अस्त्र सामर्थ्य हीन दिखाई दे रहे हैं, अश्व भी दीनता से आंखों को झपक रहे हैं, और हाथी दुर्गन्धपूर्ण मदधारा से युक्त होकर युद्ध से निकलने के लिए सूचित करते हैं। शंखनाद भी सुनाई नहीं दे रहे हैं। किन्तु विषाद मत करो। युद्ध में मृत्यु हुई तो स्वर्ग की प्राप्ति, यदि विजय हुई तो यश प्राप्त होता है, इसलिए युद्ध में निष्फलता नहीं है। और युद्ध में आशा को न त्यागने वाले मेरे द्वारा रक्षणीय गरुड़ के समान वेग वाले अश्व मेरी रक्षा करें। इस प्रकार विचार कर कर्ण का मन प्रसन्न हुआ। प्रसन्न होकर वह कहता है कि पाण्डव सेनाओं के अग्रभाग में प्रवेश करके धर्मराज युधिष्ठिर को बांध कर बाणों से अर्जुन को मार दूंगा। और उससे मरे हुए सिंह के वन के समान युद्धक्षेत्र सभी के लिए प्रवेश योग्य होगा।
- ऐसा विचार कर रथ पर चढ़कर अर्जुन के पास अपने रथ को ले चलो। कर्ण ने शल्यराज को निर्देश दिया।

ध्यान दें:

आपने क्या सीखा

- कर्ण का गुरु के समीप शिक्षा ग्रहण करना
- कर्ण के मिथ्या ब्राह्मण होने पर परशुराम द्वारा श्राप
- कृदन्त रूपों में प्रकृति प्रत्यय

पाठान्त प्रश्न

1. कर्ण के द्वारा किये गए परशुराम के वर्णन को बताओ?
2. युद्ध में कर्ण के अशुभ लक्षणों को वर्णित कीजिए?
3. कर्ण की श्राप कथा को सविस्तार लिखिए?
4. कर्ण के घोड़ों की विशेषताओं को बताइए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. कुन्ती
2. जामदग्न्य परशुराम
3. ब्राह्मणों के लिए
4. वज्रमुख
5. समय आने पर वे अस्त्र विफल हो जाएंगे।

उत्तर-2

6. युद्ध में मृत्यु हुई तो स्वर्ग प्राप्ति और विजय हुई तो यश प्राप्ति।
7. काम्बोज देश में
8. अर्जुन को